**डॉ. विजय मिश्र**

हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत १८ बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।

सम्पर्क : १८०, बेडफोर्ड रोड, लिंकन, एमए. ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

विमर्श

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-९

# सारथी सुमन्त्र

अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद सहयोग - संजीव त्रिपाठी

किसी भी सकुशल राजा को सुचारू ढंग से राज्य की व्यवस्था को चलाने और अपनी प्रजा की कुशलता की जानकारी रखने के लिए विश्वशनीय सहयोगी की आवश्कता होती है। अधिकांश अतिविश्वासपात्र सहयोगी या सेवक किसी ऐसे परिवार से होता है जो राजघराने का पीढ़ियों से भरोसेमंद व वफ़ादार हो। विश्वशनीय हितेषी सदैव राजा के हितों के लिए समर्पित रहता है और पूर्ण रूप से राजा के आदेश और इच्छानुसार कार्य करता है। राजा के देशाटन के समय वह सारथी बनकर राजा की सकुशल यात्रा की जिम्मेदारी भी निभाता है। सारथी भारतीय परम्परा की बहुत पुरानी अवधारणा है। किसी योद्धा की शक्ति और युद्धकौशल की तुलना सारथी के व्यक्तित्व से की जाती है। श्रीकृष्ण महाभारत के युद्ध में वीर अर्जुन के सारथी थे और अर्जुन की विजय का काफी कुछ श्रेय उनको जाता है।

राजा दशरथ के आठ मंत्री थे जो उन्हें राज्य संचालन में सलाह देते थे। यद्धपि वाल्मीकि का सुमन्त्र आठ मंत्रियों की समिति में शामिल नहीं था, पर वह राजा का व्यक्तिगत सलाहकार था और राजा के परिवार के सदस्य की तरह थे। जब वृद्धावस्था में राजा दशरथ पुत्र न होने के कारण निराश थे तब सुमन्त्र ने उन्हें अहम सलाह दी। यह उनकी ही सलाह थी कि राजा को ऋषि श्रृंगी को बुलाकर पुत्रेष्ठी यज्ञ करना चाहिये जिससे पुत्र प्राप्ति हो सकती है। यहाँ पर उनका दूसरे मंत्रियों से कर्त्तव्य भिन्न है, क्योंकि अन्य मंत्री राजा दशरथ को राजकीय कार्यों से सम्बंधित सलाह देते थे, जबकि सुमन्त्र उनके निजी विषयों पर।

राजा अपने व्यक्तिगत निर्णयों के लिए सुमन्त्र की सलाह पर काफी भरोसा करते थे। ऐसा संभव है कि भरत की अनुपस्थिति में राम के राज्याभिषेक का निर्णय राजा दशरथ ने सुमन्त्र की सलाह पर ही किया हो। राजा ने अपना मन बनाया और सभी को अगले कार्यक्रम के लिए तैयार रहने का आदेश दिया। राजा दशरथ ने सुमन्त्र को ही राम को अपने निर्णय के बारे में सूचित करने भेजा और राजदरबार में उपस्थित होने को कहा जहाँ उनको राजकीय प्रक्रिया से अवगत कराया जा सके। जब रानी कैकेयी हठ करके राजा दशरथ से राम को वनवास भेजने का वचन ले लेती है, तब भी राजा दशरथ सुमन्त्र को सलाह-मशवरे और स्थिति को संभालने के लिए बुलाते हैं।

राज्याभिषेक वाले दिन प्रातःकाल राम को विषम परिस्थिति में मिलने को बुलाने के लिए राजा दशरथ सुमन्त्र को ही भेजते हैं। जैसे ही सुमन्त्र को मालूम होता है कि मंत्रीगण और ऋषि-मुनि राजा के आने का इंतज़ार कर रहे हैं तो उसने तुरंत जाकर राजा को इसकी सूचना दी। हालांकि सुमन्त्र को यह पता चल गया होगा कि सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है फिर भी वह राम को लेने के लिये लक्ष्मण को रथ में साथ ले जाता है। वह राम को राजा दशरथ की मानसिक व्याकुलता का आभास कराये बिना वार्तालाप में सहज रहता है। राम राजा दशरथ से मिलने सज-धज कर पूरे ठाट-वाट के साथ जाते हैं जैसे मानो वह राज्याभिषेक के लिए आये हों। गोपनीयता सन्देशवाहक का सबसे उत्तम गुण है!

सही मायने में सुमन्त्र राजा दशरथ के लिये द्वारपाल की तरह था। राम के वनवास की बात से दुखी राजा दशरथ की व्यथा से चिंतित होकर सुमन्त्र गुस्से के साथ कैकेयी को अपनी परेशानी समझाता है। राजा से निकटता के कारण सुमन्त्र को वो सब बातें मालूम रहती है जो बहुत कम लोग जानते है। वह सबके सामने कैकेयी को दोषी बताता है और उसकी माँ के द्वारा पिता के साथ किये गए दुर्व्यवहार की तरफ इशारा करता है। सुमन्त्र के द्वारा कहानी के इस उदाहरण से समझाने का उद्देश्य कैकेयी को अपने हठीले वर्ताब से रोकना था, लेकिन कहानी से कैकेयी को कोई अंतर नहीं पड़ता है। वह तो बहुत ही वाचाल और अपनी माँ की तरह ही जिद्दी थी।

राजा का आदेश कि राम के वनवास जाते समय फ़ौज और कोष साथ जायेगा, का कैकेयी के द्वारा विरोध किये जाने के बाद सुमन्त्र को राम, लक्ष्मण और सीता को वन में छोड़ने का कठिन

> जिस तरह से लक्ष्मण, सुग्रीव और हनुमान ने राम की सेवा की और तरह-तरह से सहायता की, उसी तरह सुमन्त्र राजा दशरथ के हितों की रक्षा के लिये सतर्क होकर कार्य करता है। सेवक होने के बावजूद उसने अपने परिश्रम और घनिष्ठता के कारण व्यक्तिगत सलाहकार के रूप में अपना स्थान बनाया।

कार्य सौंपा गया। उन्होंने रथ को तैयार किया और राजा दशरथ ने व्याकुल होकर दुखी मन से विदाई दी। सुमन्त्र को अपना दायित्व निर्वाह करना पड़ा और उनको ऐसा लग रहा था राम कुछ दिन घूमकर वापिस आ जायेंगे। नगरवासी सहित राजा दशरथ रथ के पीछे-पीछे चलते हैं और उन्होंने सुमन्त्र से धीरे रथ को चलाने को कहा जिससे राम बहुत दूर नहीं चले जायें।

राम ने सुमन्त्र को रथ तेज चलने को कहा जिससे नगरवासी और राजा के विरह के, कष्ट के अन्तराल को कम किया जा सके। सुमन्त्र को बीच का रास्ता चुनना है, क्योंकि उसे राजा की आज्ञा का पालन भी करना था और साथ ही साथ रथ में सवार राम की भावनाओं का सम्मान भी।

शाम को सुमन्त्र ने रथ को सरयू नदी के किनारे रोका। राम, लक्ष्मण और सीता को देखने पूरा गाँव वहाँ एकत्रित हो गया। राम ने सुमन्त्र को सलाह दी कि जब तक लोग जागें सुबह उससे पहिले जल्दी यहाँ चल देना चाहिये। आगे नगरवासियों को भ्रमित करने के लिये राम ने सारथी से रथ को विपरीत दिशा में चलने को कहा। सुमन्त्र ने आदेश का पालन करते हुये रथ को दक्षिण दिशा की ओर जाने से पहिले कुछ दूर उत्तर दिशा की ओर चलाया। सुमन्त्र ने रथ को जंगल के रास्ते से चलाया ताकि नगरवासियों की नज़र से राम को बचाया ज सके।

गंगा नदी के किनारे पहुंचकर राम ने अयोध्या का जयघोष किया और एकत्रित लोगों से विदाई ली। सुमन्त्र राम से वापिस चलने के लिये विनती करता है, वह खाली रथ अयोध्या ले जाने से बहुत घबराता है। जब राम सुमन्त्र से व्यथित राजा दशरथ की देखभाल करने और वापिस जाने का आग्रह करते हैं तो सुमन्त्र उनसे प्रार्थना करता है कि वो उसे अपने साथ वनवास में सेवक के रूप में ले चले। इस अनुरोध से पता चलता है कि सुमन्त्र की राम से कितनी आत्मीयता थी।

टूटे हुये दिल से वह राम की नाव को गंगा के दूसरे किनारे की ओर जाते हुये देखता है। वह वहीं पर राम के बारे में सूचना आने तक इन्तजार करता है। कुछ दिन गुजर जाते हैं और तीसरे दिन गुहा के गुप्तचर से पता चलता है की राम चित्रकूट पहुँच चुके हैं। यह जानकर सुमन्त्र के मन को कुछ चैन मिलता है और वह अयोध्या की ओर प्रस्थान करता है।

सुमन्त्र को राम की वनवास यात्रा की कहानी व्यथित राजा दशरथ को बतानी थी। राजा सब कुछ विस्तृत ढंग से सुनना चाहते हैं और वह राम के बारे में जानकार अत्यंत दुखी होते हैं। सुमन्त्र सच्चाई से सब कुछ वास्तविकता बतलाते हैं। वह राजा को बतलाता है कि राम ने अपना अभिवादन भेजा है और सभी लोगों से आपकी देखभाल के लिये अनुरोध किया है। सुमन्त्र राजा से आगे कहता है कि राम ने आपसे आग्रह किया है कि आप उनकी माता कौसल्या के साथ सहानुभूति रखें ताकि उनको पुत्र विरह का दुःख ज्यादा न हो। राजा के बहुत पूछने के बाद सुमन्त्र बताता है कि लक्ष्मण वन गमन के समय बहुत परेशान थे और वह राजा को ही इस घटनाक्रम के लिये दोषी मानते हैं।

जब राजा ने पूछा कि क्या सीता ने कुछ कहा, तो दुखी होकर सुमन्त्र ने दशरथ की प्रिय पुत्रवधू सीता के उस व्यथित मुरझाये हुये चेहरे के बारे में बतलाया। सुमन्त्र ने विश्वास से बतलाया कि राम दृढ़ थे और उनको अपने वनवास का कोई मलाल नहीं था। सुमन्त्र के अभिकथन का कौसल्या की वेदना को कम करने लिये कुछ ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा, वह तो बहुत क्रोधित हो फूटफूट कर रोने लगती है। वह राजा दशरथ को इस अशुभ परिस्थिति के लिये जिम्मेदार ठहराती है। सुमन्त्र असहाय बनकर खड़ा रहता है। राजा दसरथ कौसल्या को उस श्राप के बारे में बतलाते हैं जो उन्हें बचपन में मिला था। कहानी सुनते-सुनते रानी कौशल्या सो जाती हैं और राजा दशरथ का निधन हो जाता है। महर्षि वाल्मीकि ने राजा दशरथ की मृत्यु पर सुमन्त्र की प्रतिक्रिया का ज्यादा उल्लेख नहीं किया है।

वाल्मीकि रामायण का पात्र सुमन्त्र एक वृद्ध राजा के लिये आदर्श सेवक है। वह उस प्रथा में शामिल है जिसमें विश्वासपात्र लोग राजा के व्यक्तिगत सलाहकार की भूमिका निभाते हैं। सुमन्त्र का पात्र मंथरा पात्र से विरोधाभाषी है। हो सकता मंथरा का परिवार भी कैकेय के राजा का विश्वासपात्र रहा हो और इसीलिए मंथरा को कैकेयी के साथ अयोध्या भेजा गया जहाँ वह सदैव कैकेय वंश के हितों की रक्षा कर सके। वाल्मीकि ने इन दोनों पात्रों के द्वारा यह दर्शाने की कोशिश की है कि सेवकों को अपने मालिकों के हितों की रक्षा करने की लिये किन-किन विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। सुमन्त्र ने अपनी होशियारी से कैकेयी को उसकी माँ की कहानी बतलाकर समझाने की कोशिश की लेकिन उसे परेशान करने के लिये कोई षड़यंत्र नहीं रचा।

रामायण व्यक्तिगत निष्ठा की कहानी है। कहानी के द्वारा वाल्मीकि विभिन्न पात्रों के बीच निष्ठा को पैदा करते हैं और पनपाते हैं। राम और लक्ष्मण के बीच एक विशेष निष्ठा का सम्बन्ध है, राम और सुग्रीव के बीच निष्ठा सम्बन्ध बनता है जिसके कारण आगे चलकर राम और हनुमान के बीच एक अनूठी निष्ठा पनपती है। जिस तरह से लक्ष्मण, सुग्रीव और हनुमान ने राम की सेवा की और तरह-तरह से सहायता की, उसी तरह सुमन्त्र राजा दशरथ के हितों की रक्षा के लिये सतर्क होकर कार्य करता है। सेवक होने के बावजूद उसने अपने परिश्रम और घनिष्ठता के कारण व्यक्तिगत सलाहकार के रूप में अपना स्थान बनाया। उसने अपने दायरे में रहकर हमेशा प्रेम और अत्यंत धैर्य से कार्य किया।■